Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2024 = 8.153
https://www.srjis.com/issues_data/242
Peer Reviewed & Refereed Journal, NOV-DEC 2024, Vol- 13/86

शैक्षिक परिदृश्य में गुरु शिष्य संबंध

डॉ सुनील कुमार सिंह
ग्राम- बागजोरावर, पोस्ट- श्रीनिवासधाम, थाना- जिगना, जिला– मिर्जापुर, पिनकोड-(231313)
(उत्तर प्रदेश)

Paper Received On: 20 NOV 2024

Peer Reviewed On: 24 DEC 2024

Published On: 01 JAN 2025

गुरु शिष्य संबंध -

- शिक्षक वह होता है जो हमें सांसारिकता एवं आध्यात्मिकता से रूबरू कराए और अध्यापक यानी किताबों का अध्ययन करवाये।

गुरु शिक्षक तथा शिष्य छात्र के आपसी संबंध को भली भांति जानने एवं समझने के लिए गुरु तथा शिष्य के संप्रत्यय को जानना एवं समझना होगा।। शिक्षक के अनेक पर्यायवाची शब्द है गुरु आचार्य उपाध्याय गुरु दो शब्दों से मिलकर बना है । । । जो क्रमशः गु तथा रु है । गु का अर्थ है अंधकार तथा रु का अर्थ नष्ट करना इस प्रकार गुरु का शाब्दिक अर्थ अज्ञान रूपी अंधकार को नष्ट करके प्रकाश की ओर उन्मुख करने वाला

शिक्षक के पर्यायवाची आचार्य का शाब्दिक अर्थ उत्तम आचार की शिक्षा देने वाला या अपने अपने आवरण से शिष्य को सदाचारी बनाने वाला तथा उपाध्याय का अर्थ अध्ययन में सहायता करने वाला प्राचीन भारत में गुरुदेव रूप में प्रतिष्ठित थे उनके लिए बुद्धि ही जन है अग्नि प्रचेता विशेष ज्ञानी विश्वा वेद विश्वावेदा सर्वज्ञ जातावेदा जो उत्पन्न हुआ है उसे जानने वाला और सत्यजन्मा सत्य को जानने वाला आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है धार्मिक गुरु को ब्रह्म रूप में प्रतिष्ठित थे जिनके संदर्भ में कहा भी गया-

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरुदेव महेश्वरः।
गुरु साक्षात परम ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः। ।

वर्तमान में मानवता परिवर्तित विचारों में भी शिक्षक का एक विशिष्ट महत्व है । आज वह देव रूप में प्रतिष्ठित नहीं है लेकिन शिक्षण प्रक्रिया का एक आवश्यक अंग है । आज के वर्तमान समय में उसे मित्र पथ प्रदर्शक मार्ग निर्देशक और विषय विशेषज्ञ के रूप में स्वीकार किया गया है । यह शिष्य शिक्षार्थी में सीखने की जिज्ञासा उत्पन्न कर उसे सीखने के लिए तैयार करता है । उसकी कठिनाइयों को दूर करता है A उसका मार्गदर्शन करता है ।

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उत्तम शिक्षकों के अभाव में विद्यालय अपने उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं कर सकते हैं A क्योंकि औपचारिक शिक्षा की सफलता में शिक्षक का विशेष महत्व है।

डेविस के अनुसार- " प्रत्येक विद्यालय की सफलता मुख्य रूप से शिक्षक गुरु पर निर्भर करती है योग्य शिक्षकों के अभाव में भवन और उत्तमोतम शिक्षण सामग्री के द्वारा भी कोई समुदाय प्रभावशाली विद्यालयों का निर्माण नहीं कर सकता"।

कहावत भी है "अच्छे कलाकार के हाथ में बिगड़ा हुआ वाद्य यंत्र भी ठीक बजता है" ।

शिक्षक अपनी योग्यता पेशे के प्रति समर्पण भेदभाव रहित आचरण तथा सदा व्यवहार से समाज में अपना आदर या सम्मान प्राप्त करने में समर्थ होता है गुरु इसलिए परमब्रह्मा कहा जाता है क्योंकि वह अकेले ब्रह्मा विष्णु तथा महेश तीनों की भूमिका का निर्वाह करता है। वह ब्रह्म की तरह शिष्य को गिरने का काम करता है । तो विष्णु की तरह उसका पालन पोषण करता है और शंकर भगवान की भूमिका में शिष्य के सारे दुर्गुणों का नाश करता है ।

शिष्य शिक्षार्थी वह व्यक्ति है। । जो सीख रहा है शिष्य के पर्यायवाची शब्द क्रमशः नौसिखिया शिक्षार्थी विद्यार्थी छात्र शिक्ष प्रशिक्षु है । शिक्षार्थी शिक्षा को अर्जित करने वाला विद्यार्थी - विद्या को अर्जित करने वाला नौसिखिया- नई चीजों को सिखाने वाला शिक्षक़ शिक्षा को प्राप्त करने वाला प्रशिक्षु प्रशिक्षण को प्राप्त करने वाला व्यक्ति छात्र सीखने वाला बालक वैदिक काल में शिष्य को शिष्य को ब्रह्मचारी अंतेवासी बौद्ध काल में शिष्य को श्रमण या सामनेर तथा मुस्लिम काल में शागिद से संबंधित किया जाता था । शिक्षा में गुरु तथा शिष्य के मध्य अन्य अन्योन्यक्रिया का साधन पाठ्यक्रम(पाठ्यचर्या + पाठ्य सहगामी क्रियाएं) होता है ।

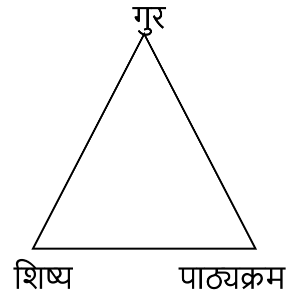

शिक्षा का तात्पर्य मानव की अंतर निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना है (स्वामी विवेकानंद) तथा शिक्षा का उद्देश्य शिष्य छात्र का सर्वांगीण विकास क्रमशः - शारीरिक विकास मानसिक विकास नैतिकता का विकास चारित्रिक का विकास व्यक्तित्व का विकास जीविकोपार्जन संबंधी संबंधित गुण का विकास ज्ञान एवं अनुभव के विकास पर बल बाल चित्र वृत्तियां चितवृत्तियो का निरोध नागरिक तथा सामाजिक कर्तव्यों के विकास पर बल सामाजिक कुशलता की उन्नति राष्ट्रीय राष्ट्रीय संस्कृत का संरक्षण एवं प्रचार का विकास ईश्वर भक्ति तथा धार्मिकता की भावना का विकास विश्व बंधुत्व की भावना का विकास आदि होता है प्रत्येक मनुष्य को शब्द एवं संस्कृति बनने हेतु शिक्षा की की आवश्यकता है शिक्षा से विहीन मनुष्यों को पशु का दर्जा दिया जाता था इसकी महत्ता पर प्रकाश डालते हुए भर्तहरि ने कहा है -" विद्या ही मनुष्य की शोभा है विद्या ही मनुष्य का गुप्त धन है विद्या भोग पदार्थ यस और सुख देने वाली है विद्या गुरुओं का गुरु है विदेश में विद्या कुटुंबी जनों के समान

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सहायक होती है विद्या ही सबसे बड़ा देवता है राज्यसभा में विद्या का बहुत आदर सम्मान होता है धन का नहीं अतः विद्या विहीन मनुष्य पशु के तुल्य होता है "

प्राचीन भारत में शिक्षा को प्रकाश का स्रोत अंतर्दृष्टि अंतर ज्योति ज्ञान चक्षु और मनुष्य का तीसरा नेत्र माना गया है सुभाषित रत्न संग्रह नामक ग्रंथ में लिखा गया है कि ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है(ज्ञानम मानुजस्य तृतीयम नेत्र) जो उसे समग्र तत्वों के मूल को समझने की क्षमता प्रदान करता है तथा उसे उचित व्यवहार करने की ओर अग्रसारित करता है ।

वैदिक काल में गुरु एवं शिष्य के बीच के आपसी संबंध बहुत ही मधुर पवन एवं पवित्र हुआ करते थे गुरु शिष्यों को मानस पुत्र पुत्रवत मानते थे । । ऊपर से प्रेम की बरसात होती थी और नीचे से श्रद्धा उमड़ती थी इस प्रकार हम कह सकते हैं । कि इस काल में गुरु और शिष्य का आपसी संबंध पिता और पुत्र के संबंध की भांति था । जिस प्रकार एक पिता अपना धन आदि पुत्र को समर्पित कर देता है । ठीक उसी प्रकार से गुरु भी अपना संपूर्ण ज्ञान और तप आदि अपने शिष्यों को समर्पित कर दिया करते थे गुरु अपने सभी शिष्यों पर ठीक उसी प्रकार का दृष्टिकोण अपनाते था । जिस प्रकार से एक पिता अपने सभी पुत्रों के प्रति दृष्टिकोण अपनाते हैं ।

इस संदर्भ में डॉक्टर ए0 एस0 अलतेकर का विचार है कि " वैदिक काल में शिक्षक एवं छात्र के संबंध स्नेह पूर्ण तथा घनिष्ठ थी A और उनके भाoh जीवन में भी बने रहते थे । वैदिक काल में गुरु शिष्य संबंध आदर्श होते थे गुरु छात्र का आध्यात्मिक पिता माना जाता था । उपनयन संस्कार के उपरांत बालक अपने पिता के घर को परित्याग कर गुरु की शरण में आ जाता है गुरु उसी क्षण से ही ब्रह्मचारी के जीवन शिक्षा तथा भविष्य का संपूर्ण उत्तरदायित्व सहर्ष स्वीकार कर लेता था वह छात्र पुत्रवत गुरु आश्रम मे इनके परिवार के सदस्य के रूप में निवास करता था । गुरु शिष्य के लिए मूलभूत आवश्यकता रोटी कपड़ा तथा आवास की व्यवस्था करता था । और आवश्यकता पड़ने पर सेवा चिकित्सा आदि की भी व्यवस्था करता था । गुरु अपने हृदय का संपूर्ण प्यार मस्तिष्क का संपूर्ण ज्ञान छात्र पर उड़ेल देता था । गुरु अपने शिष्यों के चतुर्दिक विकास के लिए हर क्षण संभव प्रयास करते थे । वैदिक काल में गुरु देवो भव की भावना व्याप्त थी गुरु की गहन विद्वता निष्कलंक चरित्र एवं पितृतुल्य व्यवहार की कारण छात्र अपने गुरु के प्रति अखंड आस्था एवं अटूट विश्वास करते थे।

वैदिक काल में गुरु को ईश्वर से भी ऊंचा स्थान देकर प्रतिष्ठित किया गया था इस तथ्य की पुष्टि कबीर दास जी के नीचे वर्णित दोहे से की जा सकती है -

गुरु गोविंद दो उखाड़े काके लागू पाए ।

बलिहारी गुरु आपने गोविंद गोविंद दीयो बताएं ।।। ।।

कबीर दास जी ने इस दोहे में गुरु की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जीवन में कभी ऐसी परिस्थिति आ जाएगी जब गुरु और गोविंद ईश्वर एक साथ खड़े मिले तब पहले किन्हे प्रणाम करना चाहिए गुरु ने गोविंद से हमारा परिचय कराया है इसलिए गुरु का स्थान गोविंद से भी ऊंचा है ।

वैदिक काल में गुरु शिष्य के आपसी संबंधों को निम्न पंक्तियों में संक्षिप्त रूप से वर्णित किया जा सकता है ।

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

गुरु के प्रति शिष्यों के कर्तव्यों का निर्वहन -

1- शिष्य प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर अपने गुरु का चरण स्पर्श करता था ।

2- शिष्य गुरु के स्थान की सफाई पूजा आदि से संबंधित सामान को इकट्ठा करते थे ।

3- शिष्य गुरु के लिए भिक्षा मांग कर लाते थे ।

4- शिष्य गुरु के खेतों में काम करते थे ।

5-शिष्य गुरु आश्रम की गायों को चराया करते थे ।

6- शिष्य गुरु आश्रम के दैनिक कार्यों में सहयोग करते थे । ।

7- शिष्य गुरु की हर आज्ञा का पालन करते थे ।

8- शिष्य गुरु के आदेशों का आजीवन पालन करते थे ।

9- शिष्य गुरु के रात्रि विश्राम की व्यवस्था करते थे ।

10- शिष्य गुरु के सोने से पहले उनके पैर दबाते थे ।

11- शिष्य शिक्षा समाप्ति पर अपनी समर्थ अनुसार सामर्थ्यनुसार गुरु दक्षिणा देते थे ।

12- शिष्य गुरु कुल छोड़ने के बाद भी गुरु का सम्मान करते थे ।

शिष्य के प्रति गुरु के कर्तव्यों का निर्वहन-

1- उपनयन संस्कार के उपरांत छात्रों के रहन-सहन तथा पालन पोषण की व्यवस्था गुरु द्वारा की जाती थी ।

2- शिशु के स्वास्थ्य की देखभाल करना उनके अस्वस्थ होने पर उपचार की यथोचित व्यवस्था करना होता था ।

3- शिष्यों के व्यक्तिगत समस्याओं का यथोचित रूप से समाधान करना होता था ।

4- शिष्यों के चरित्र विकास पर बल देते थे ।

5- शिष्यो के ज्ञान एवं अनुभव को बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील रहते थे ।

6- शिष्यों की जिज्ञासाओं को शांत करते थे ।

7- शिष्यों के आदर्श गुना के विकास पर बल देते थे ।

8- शिष्यों में बुरी आदतों से छुटकारा दिलाते थे ।

9- शिष्यों को भावी जीवन के लिए तैयार करते थे ।

10- शिष्यों में आध्यात्मिक गुना के विकास के लिए सदैव तत्पर पर रहते थे ।

11- शिष्यों की शिक्षा पूरी होने पर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश की आज्ञा देना और उनका भावी जीवन के लिए मार्गदर्शन करते थे ।

12– शिष्यों के आजीवन शंकाओं का समाधान करते थे ।

13– शिष्यों के सर्वांगीण विकास हेतु तत्पर रहते थे ।

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

गुरु अपने कर्तव्यों के निर्वहन के कारण समाज में मानस पिता तथा शिष्य अपने कर्तव्यों के पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी से निर्वहन करने के कारण मानस पुत्र के रूप में संबोधित किए जाते थे ।

बौद्ध काल में गुरु शिष्य के आपसी संबंध वैदिक काल की तरह पवित्र पावन तथा स्नेह पूर्ण था । इस काल में भिक्षुक अपने छात्रों के स्वास्थ्य शिक्षा आचरण नैतिक व्यवहार तथा आध्यात्मिक विकास पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देते थे A इस प्रकार बौद्ध भिक्षुओं को मुख्य मुख्य कर्तव्य छात्रों के सर्वांगीण विकास के मार्ग को प्रशस्त करना था । छात्रों का मुख्य कर्तव्य अपने आचार्य की सेवा करना होना था A जिसके फल स्वरुप गुरु शिष्य संबंधों का आधार परस्पर परस्पर मधुर पावन पवित्र स्नेहपूर्ण प्रेम पूर्ण व्यवहार तथा श्रद्धा विश्वास का था आचार्य अपने उच्च व्यक्तित्व विद्वता चरित्र साधना तपस्या अनुशासन संयम तथा पक्षपात रहित व्यवहार से छात्रों पर अपना अमित प्रभाव छोड़ते थे । शीश भी अपनी आस्था श्रद्धा विश्वास विनय आदर्श तथा सेवा युक्त व्यवहार से अध्यापकों को श्रद्धा सुमन अर्पित करते थे गुरु शिष्य के आदर्श संबंध की चर्चा करते हुए डॉ ए एस आलतेकर ने लिखा है कि- " अपने गुरु के साथ नौ शिष्य के संबंधों का स्वरूप पुत्र अनुरूप था वह पारस्परिक सम्मान विश्वास और प्रेम से आबद्ध थे ।

मुस्लिम काल में प्राचीन वैदिक काल एवं बौद्ध काल की भांति गुरु शिष्य का पारस्परिक संबंध श्रद्धा व स्नेह युक्त था गुरु अपने शिष्यों को पुत्रवत समझता था गुरु के बिना ज्ञान संभव नहीं ज्ञान के बिना इस्लाम धर्म के मर्म को भली-भांति नहीं समझा जा सकता है जो की एक सवाल पुर्णय का काम है । इस प्रकार की भावना समाज में व्याप्त थी गुरु सेवा शिष्य का कर्तव्य माना जाता था A इतना होने के बावजूद भी प्राचीन काल की बात गुरु भक्ति का आदर्श अब नहीं रह गया था । और नहीं शिक्षकों के लिए शिष्यों में त्याग की भावना थी स्वयं गुरु भी बहुधा बड़ा ही कठोरतापूर्ण व्यवहार करते थे अतः शिष्य उनसे स्नेह नहीं करते थे वरना वरन भयभीत रहते थे । इस कल के अंतिम समय में यह संबंध और भी कट्टरता पूर्ण हो गए थे गुरु शिष्य का रिश्ता हमेशा आदर और सम्मान से परिपूर्ण रहा है । ।खास कर भारत के इतिहास में गुरु और शिष्य की कई जोड़ियो ने मिसाल कायम की है इसमें एकलव्य और द्रोणाचार्य करण और परशुराम श्री कृष्णा और अर्जुन तथा आरुषि तथा महर्षि की जोड़ी के बारे में आज भी स्कूलों में पढ़ाया जाता है । समय के साथ गुरु शिष्य की जोड़ी और संबंध में काफी बदलाव हुए हैं । पहले जहां आदर और सम्मान हुआ करता था । वहीं अब गुरु और शिष्य के बीच आधार के साथ मित्रता भी देखी जा सकती है । अब गुरु सिर्फ शिक्षा तक ही नहीं बल्कि शिष्यों के करियर को बेहतर बनाने के लिए भी जाने जाते हैं । किताबी अध्ययन की जगह अब प्रेक्टिकल तथा तकनीकी अध्ययन ने जगह ले ली है । लेकिन गुरु शिष्य के प्रति प्रेम और विश्वास बना हुआ है A वही शिष्य भी गुरु को अपने मेंटर साथी और मार्गदर्शन के रूप में देखते हैं । समय कितना भी बदल जाए गुरु का सम्मान पहले भी था आज भी है । और हमेशा रहेगा यदि गुरु अपने कर्तव्यों का भली भारत निर्वहन तथा छात्रों के उत्थान के लिए समर्पण भाव अतः मन से अपने कार्य एवं व्यवहार में परिलक्षित करते रहेंगे ।

गुरु शिष्य का एक प्यारा सा रिश्ता है-

गुरु कागज है तो शिष्य एक कलम

गुरु बसता है तो शिष्य उसके अंदर की किताबें

गुरु एक विद्या है । तो शिष्य उसे सार्थक करने वाला साधक

जय गुरु जय शिष्य।

जय हिंद जय भारत।।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अग्रवाल जैसी (1972) एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन एंड प्लैनिंग इन इंडिया आर्य बुक डिपो करोल बाग न्यू दिल्ली
अग्रवाल जैसी (2011) डेवलपमेंट ऑफ़ एजुकेशन इन इंडिया नई दिल्ली इंडिया शिप्रा पब्लिकेशंस अलतेकर ए० एस० (1957) एजुकेशन इन असिएंट इंडिया पांचवा संस्करण वाराणसी नंदकिशोर एंड ब्रदर्स
चौबे एस० पी (2016) हिस्ट्री एंड प्रॉब्लम्स आफ इंडियन एजुकेशन आगरा विनोद पुस्तक मंदिर
राष्ट्रीय शिक्षा नीति ड्राफ्ट (2019) मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली
मुखर्जी एस० एन० (1964) एजुकेशन इन इंडिया टुडे एंड टुमौरो आचार्य बुक डिपो बड़ौदा भारत
संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति की रिपोर्ट (1992) मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली
शिक्षा आयोग की रिपोर्ट (1964– 66) शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली
राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर रिपोर्ट (1986) मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली
दत बी० तथा गर्ग जे० (2012) एजुकेशन सिस्टम इन इंडिया नई दिल्ली इंडिया ग्लोबल पब्लिकेशंस
दास बी 0 एन 0(2008) हिस्ट्री आफ एजुकेशन इन इंडिया नई दिल्ली भारत डोमिनेंट पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स
पांडे राम सकल शिक्षा की ऐतिहासिक एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
अग्रवाल 0एस० के शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत मॉडर्न पब्लिकेशन मेरठ

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies